Date - 08/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

वर्गीकरण एवं मूल्यांकन
Classifications And Assessment

असामान्य मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक, मूल्यांकन (Assessment) तथा फिर उसके बाद अपअनुकूली व्यवहार (Maladaptive behaviour) था असामान्य व्यवहार का वर्गीकरण करते हैं ताकि उनके लक्षणों, कारणों आदि का ठीक ढंग से अध्ययन किया जा सके। मूल्यांकन की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक किसी नियम पर पहुँचने के लिए सूचनाओं (Information) को इकट्ठा करते हैं। सच्चाई यह है कि असामान्य मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे मूल्यांकन (Assessment) के तीन चरण होते हैं। पहले चरण में मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन से सम्बंधित सूचनाओं को इक्ट्ठा करते हैं। दूसरे चरण में, वे इकट्ठा किये गए सूचनाओं को संगठित करते हैं तथा उन सूचनाओं को संसाधित करके एक विशेष विवरण का प्रारूप देते हैं ताकि मूल्यांकित किये जाने वाले व्यक्तियों के स्वरूप के बारे में जाना जा सके । अंतिम चरण में मनोवैज्ञानिक उस विवरण को विभिन्न तरह के विकृतियों (Disorders) के बारे में पहले से ज्ञात तथ्यों के साथ तुलना करता है। इस अंतिम चरण से वर्गीकरण तंत्र (Classifcation System) का निर्माण होता है जिसमें विकृतियों का विभिन्न श्रेणी होते हैं और लक्षणों के आधार पर विकृतियों को श्रेणीकृत करने के लिए कुछ नियम होते हैं। इस तरह यदि देखा जाय तो वर्गीकरण की प्रक्रिया मूल्यांकन की प्रक्रिया से ही उपजती है और मानसिक रोगी को लक्षण के आधार पर समझने के लिये एक उपयुक्त तरीका प्रदान करता है। इस इकाई में इन दोनों प्रक्रियाओं से सम्बद्ध महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डाला जायेगा।

वर्गीकरण का अर्थ **(Meaning of Classification) :**

असामान्य व्यवहार या मानसिक विकृति के वर्गीकरण (Classification) से तात्पर्य असामान्य व्यवहार को ऐसे श्रेणियों में विभक्त करने से होता है जिससे उनके स्वरूप को ठीक ढंग से एवं स्पष्ट रूप से समझा जा सके। दूसरे शब्दों में, वर्गीकरण का अर्थ असामान्य व्यवहार अथवा मानसिक विकृति को कुछ निश्चित आधारों पर कुछ निश्चित प्रकारों श्रेणियों (Categories) या वर्गों (Classes) में विभाजित करने से होता है। श्रेणीकरण (Cotegorization) के इस प्रविधि को निदान (Dignosis) कहा जाता है। और जब निदान मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा किया जाता है तो इसे मनोनिदान (Psychodignosis) कहा जाता है। इसी अर्थ में सेल्गिमैन एवं रोजेनहान (Seligman & Rosenhan. 1998) ने निदान को परिभाषित करते हुए कहा है कि, "व्यवहारपरक एवं मनोवैज्ञानिक पैटर्न के अनुसार मनोवैज्ञानिक विकृतियों का श्रेणीकरण ही निदान कहलाता है। वर्गीकरण या श्रेणीकरण करने के बाद ही असामान्य व्यवहार (Abnormal behaviour) या कुसमायोजी व्यवहार (Maladoptive behaviour) के स्वरूप, कारण तथा उपचार की योजना बनाते हैं।

मूल्यांकन का अर्थ **(Meaning of Assessment) :**

नैदानिक मूल्यांकन, नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक अति महत्वपूर्ण कार्य है। शाब्दिक अर्थ के अनुसार नैदानिक मूल्यांकन से तात्पर्य एक ऐसी क्रिया (Process) से होता है जिसके द्वारा नैदानिक मनोवैज्ञानिक अथवा कोई अन्य व्यक्ति किसी सेवार्थी या रोगी के सम्बंध में किसी तरह के आकलन या अनुमान करता है। सच्चाई यह है कि नैदानिक मनोवैज्ञानिक नैदानिक मूल्यांकन (Clinical assesment) जैसे पद का उपयोग दो अथर्थों में किया है-

(**i**) व्यापक (Generic) अर्थ में नैदानिक मूल्यांकन से तात्पर्य उन सभी प्रक्रियाओं से होता है जिसके सहारे नैदानिक मनोवैज्ञानिक को रोगी के बारे में जानने एवं समझने में मदद मिलती है। इसी अर्थ को ध्यान में रखते हुए कोरचिन (Korchin, 1986) ने नैदानिक मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहा है कि "नैदानिक मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके सहारे रोगी से सम्बद्ध महत्वपूर्ण निर्णय करने के लिए चिकित्सक रोगी को पूर्णरूपेण समझने - की कोशिश करता है।' स्पष्ट हुआ कि व्यापक अर्थ में नैदानिक मूल्यांकन से तात्पर्य रोगी को समझने की दिशा में चिकित्सक द्वारा किया गया किसी भी तरह के प्रयास से होता है।

(ii) दूसरे अर्थ में नैदानिक मूल्यांकन (Clinical assesment) से तात्पर्य सामान्य न होकर विशिष्ट होता है। विशेष अर्थ के मद्देनजर कोरचिन (Korchin, 1986) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि, "नैदानिक मूल्यांकन से तात्पर्य एक ऐसे उपागम या रीति से होता है जो अधिकांशतः नैदानिक अनुमान या निर्णय पर आधारित होता है और जो पूर्णरूपेण वैयक्तिक विश्लेषण करने के उद्देश्य से किसी एक परीक्षण का नहीं बल्कि परीक्षणमालाओं का उपयोग व्यक्ति के विभिन्न स्तरों एवं पहलुओं की पहचान करने में करता है।"

इसी विशिष्ट अर्थ को ध्यान में रखते हुए मर्फी तथा डेविडशोफर (Murphy & Davidshofer, 1988)नं पी इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि," नैदानिक मूल्यांकन को सूचनाओं के विभिन्न पहलुओं का एक ऐसा समन्वय के रूप में परिभाषित किया जाता है जिससे मूल्यांकित होने वाले व्यक्ति की वर्तमान स्थिति का एक पूर्णरूपेण मूल्यांकन होता है।

उपरोक्त परिभाषाओं पर गौर करने से नैदानिक मूल्यांकन के सम्बन्ध में कुछ निम्न प्रमुख बातें स्पष्ट होतीं हैं।

(i) नैदानिक मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा रोगी के बारे में आवश्यक आँकड़ों का संग्रह किया जाता है। इन आँकड़ों के संग्राहण के लिए सामान्यतः माननीकृत परीक्षण (Standardized Test), प्रक्षेपण प्रविधि (Projective Test), साक्षात्कार (Interview), प्रश्नावली (Questions) तथा व्यवहरात्मक प्रेक्षण (Behavioural Observation) आदि का परिस्थिति के माँग के अनुसार उपयोग किया जाता है।

(ii) नैदानिक मूल्यांकन में प्राप्त आँकड़ों का संग्रहण करने के साथ ही साथ उसे एक ही साथ समन्वित करके रोगी के बारे में एक समग्र मूल्यांकन किया जाता है।

(iii) नैदानिक मूल्यांकन की प्रक्रिया न केवल नैदानिक वातावरण में सम्पन्न किया जाता है बल्कि इसे गैर-नैदानिक वातावरण में भी सम्पन्न किया जाता है। जैसे विद्यालय, औद्योगिक संस्थान आदि ।

(iv) नैदानिक मूल्यांकन में चिकित्सक रोगी के लिए किसी अनुकूल मनोचिकित्सा अथवा उपचार का भी सलाह देता है।

स्पष्ट हुआ कि नैदानिक मूल्यांकन एक जटिल प्रक्रिया होती है जिसमें चिकित्सक विभिन्न स्रोतों से आँकड़ों का संग्रहण (Integration) करके रोगी के बारे में एक समग्र मूल्यांकन (Overall assesment) करता है।

नैदानिक वर्गीकरण तंत्र का महत्वपूर्ण कारण **(Important reasons for diagnostic Classification):**

असामान्य व्यवहारों या मानसिक विकृति का वर्गीकरण या श्रेणीकरण करके इसके कारणों, स्वरूप **(Nature)** एवं उपचार के लिए योजना बनाने में काफी मदद मिलती है। असामान्य व्यवहार के नैदानिक वर्गीकरण तंत्र **(Diagnostic Classification System)** की आवश्यता ऐसे तो कई कारणों से होती है, परन्तु इनमें से निम्नांकित कारणों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बतलाया गया है।

1. निदान एक संचार-न्यूनता प्रदान करता है **(Diagnosis Provides a communication** Shorthand)-निदान से मानसिक विकृतियों के बारे में सही ढंग से संचार कम शब्दों में किया जाना संभव हो पाता है ऐसा देखा गया है कि मानसिक रोगी कई तरह के लक्षणों को दिखलाते हैं। ऐसी स्थिति में निदान का महत्व काफी बढ़ जाता है। क्योंकि सभी लक्षणों को याद न रखकर संलक्षन (syndrome) एक शब्द में निदान कर याद रखा जाता है।

2. निदान उपचार के बारे में कुछ सूचना देता है **(Diagnosis tells somethings about** treatment)-मानसिक रोगों के उपचार के लिए कई तरह की प्रविधियाँ उपलब्ध हैं तथा उनमें से कुछ ऐसी हैं जो किसी विशेष मानसिक विकृतियों के लिए काफी प्रभावी रहीं हैं। निदान, मनोवैज्ञानिक को विशेष तरह के मानसिक रोगों के लिए उपयोगी उपचार विधिओं पर ही अपना ध्यान देने के लिए बाध्य करता है। स्पष्टतः तब एक अच्छा निदान निश्चित रूप से एक ऐसा उपचार विधि का सुझाव देता है जिससे उपचार अधिक प्रभावी हो सके ।

3. निदान से रोग के कारण के बारे में सूचना मिलता है। **(Diagnosis tells about etiology of disorders**)-किसी भी मानसिक विकृति को उत्पन्न होने के लिए अनेक कारण या कारक जिम्मेवार होते हैं। परन्तु कुछ रोग या मानसिक समस्याएँ ऐसी होतीं हैं जो किसी विशेष कारण (Etiology) से अधिक सम्बद्ध होते है। ऐसी परिस्थिति में निदान का काफी महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि निदान से उसके पीछे छिपे कारणों को जान लेना आसान हो जाता है।

4. निदान से वैज्ञानिक अनुसंधान में मदद मिलती है । **(Diagnosis aids Scientific Investigation)**-वैज्ञानिक अनुसंधान में भी निदान की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण होती है। समान लक्षणों वाले व्यक्तियों को एक साथ समूहन (Grouping) करके अनुसंधानकर्ताओं को निदान यह सीखने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है कि कारण एवं उपचार के ख्याल से उन लक्षणों में उभयनिष्ठ (Common) चीज क्या है।

5. निदान तीसरे पार्टी के भुगतान करने में मदद करता है । **(Diagnosis allows third party to like payment**)-अक्सर यह देखा जाता है कि मनोवैज्ञानिकों द्वारा रोगों के उपचार एवं देखभाल में होने वाले खर्च का आंशिक या पूर्णरूपेण वहन तीसरा पार्टी या बीमा कम्पनी करते हैं। यह बात हमारे देश में कम परन्तु विदेशों में अधिक देखने को मिलती है। ऐसी परिस्थिति में ऐसी कम्पनियों को रोगी के निदान (Diagnosis) की जरूरत पड़ती है ताकि वह यह समझ सके कि रोगी को सचमुच में देख-रेख की जरूरत है। इस तरह से निदान मनोवैज्ञानिक उपचार के अर्थशास्त्र के लिए आवश्यक है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि नैदानिक वर्गीकरण तंत्र **(Diagnostic classification system)** एक अति महत्त्वपूर्ण कार्य हे जिसका महत्त्व कई कारणों से है।